जुलाई, 2018

आपदा संवाद

बाढ़ संबंधित तैयारी

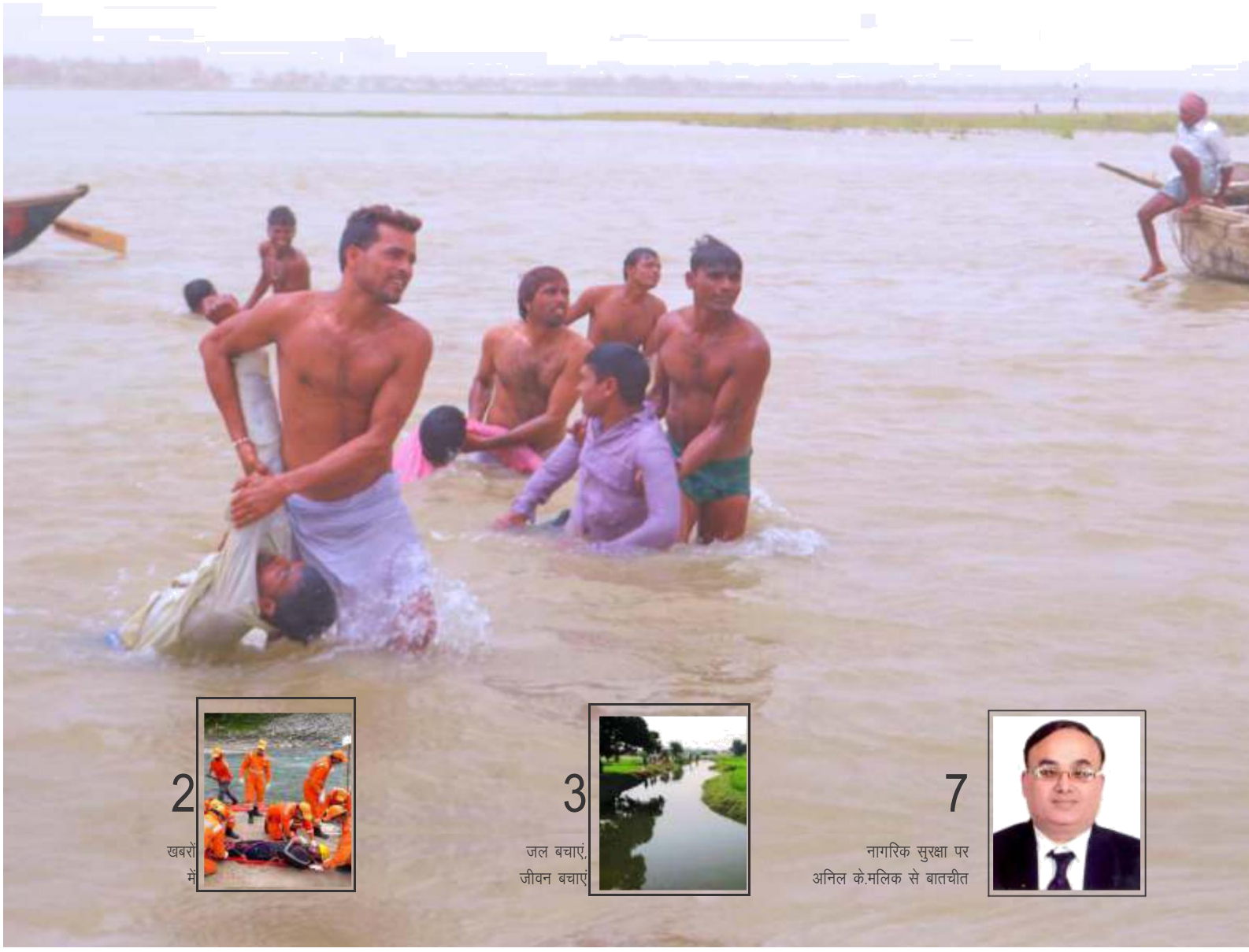

2 खबरों में

3 जल बचाएं, जीवन बचाएं

7 नागरिक सुरक्षा पर अनिल के.मलिक से बातचीत

नागरिक सुरक्षा क्षमता निर्माण कार्यशाला

किसी आपदा स्थिति में समुदाय निरपवाद रूप से प्रथम मोचक होता है। समुदाय की ऐसी किसी स्थिति में मोचन के लिए पर्याप्त जागरूकता तथा तैयारी नुकसान तथा कष्ट को कम करने में महत्वपूर्ण हो सकती हैं। समुदाय आधारित स्वैच्छिक संगठन होने के नाते नागरिक सुरक्षा संगठन समुदाय स्तर पर आपदा से बचाव, राहत तथा पुनर्वास के कार्यों के लिए एक **गुण/परिसंपत्ति** (एसेट्) है। इसके अलावा, यह समुदाय की क्षमता निर्माण तथा जन–जागरूकता के काम में महत्वपूर्ण भूमिका भी निभा सकता है।

नागरिक सुरक्षा के काम को और मजबूती प्रदान करने की दिशा में, एनडीएमए ने "आपदा प्रबंधन में नागरिक सुरक्षा कार्मिकों के क्षमता निर्माण" पर एक एक–दिवसीय सम्मेलन का आयोजन दिनांक 29 मई, 2018 को किया। इसमें लेफ्टिनेंट जनरल एन.सी. मरवाह (सेवानिवृत्त), एनडीएमए ने कहा, "इस कार्यशाला का आशय मानक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से राज्य स्तर पर किए जा रहे पहल–कार्यों के बारे में तथा क्षमता को बढ़ाने की जरूरत को समझने के लिए एक विचार–विमर्श करना है"।

महानिदेशक, अग्निशमन सेवाओं, नागरिक सुरक्षा तथा होगार्ड्स; महानिदेशक, राष्ट्रीय आपदा मोचन बल; निदेशक, राष्ट्रीय नागरिक सुरक्षा महाविद्यालय, नागपुर तथा गृह मंत्रालय और विभिन्न राज्य सरकारों के प्रतिनिधियों ने सम्मेलन में भाग लिया।

अमरनाथ यात्रा हेतु तैयारी

आगामी अमरनाथ यात्रा के दौरान, किसी आपदा की स्थिति में आपदा के प्रति तैयारी तथा मोचन प्रक्रमों को और बेहतर बनाने के आपने प्रयासों में, एनडीएमए ने इसके साथ 25 जून, 2018 को बालटाल तथा पहलगांम के मार्गों में कृत्रिम अभ्यासों का आयोजन किया।

बालटाल तथा पहलगांम–चंदनवाड़ी मार्गों में, प्राकृतिक तथा मानवजनित, दोनों तरह की आपदाओं पर कृत्रिम अभ्यासों का महत्वपूर्ण क्षेत्रों में संचालन किया गया।

एनडीएमए के विशेषज्ञों ने आपदा प्रबंधन के प्रमुख पहलुओं जैसे घटना मोचन टीमों को निर्माण, विभिन्न भागीदार एजेंसियों के बीच समन्वय, सुरक्षित निकास, चिकित्सा तैयारी तथा ट्रॉमा काउंसलिंग, पर भागीदारों को प्रशिक्षित किया।

पहले दिन (22 जून) को समन्वय सम्मेलनों के साथ दोनों कृत्रिम अभ्यास शुरू हुए जिसके बाद दूसरे दिन (23 जून) को टेबलटॉप अभ्यास संचालित किए गए।

सभी महत्वपूर्ण विभागों जैसे श्री अमरनाथ जी गुफा मंदिर बोर्ड (एसएएसबी), राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ), राज्य आपदा मोचन बल (एसडीएमएफ), राष्ट्रीय राइफल, केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ), सेना, पुलिस, चिकित्सा, नागरिक सुरक्षा, परिवहन, अग्निशमन तथा अन्य आपातकालीन सेवाओं से वरिष्ठ अधिकारी इन प्रारंभिक बैठकों में शामिल हुए तथा कृत्रिम अभ्यासों में भाग लिया।

दक्षिण कश्मीर में गुफा मंदिर में जाने के लिए वार्षिक अमरनाथ यात्रा। वार्षिक अमरनाथ यात्रा 28 जून को शुरू हुई तथा यह यात्रा 27 अगस्त, 2018 तक जारी रहेगी।

'आपदा मित्र' स्कीम की समीक्षा

एनडीएमए ने 6 जून तथा 8 जून, 2018 को संबंधित राज्यों के साथ देश के 25 राज्यों में से चुने गए 30 सर्वाधिक बाढ़ प्रवण जिलों में आपदा मोचन कार्य में सामुदायिक स्वयंसेवकों के प्रशिक्षण के लिए 'आपदा मित्र' स्कीम के क्रियान्वयन की प्रगति की समीक्षा करने के लिए दो वीडियो कॉन्फ्रेंसों का आयोजन किया है।

इस स्कीम का उद्देश्य आपातकालीन स्थितियों जैसे बाढ़, आकस्मिक बाढ़, शहरी बाढ़ में अपने समुदाय की तत्काल बचाव तथा राहत आवश्यताओं के लिए मोचन हेतु कौशलों के साथ 6,000 सामुदायिक स्वयंसेवकों को अच्छी तरह तैयार करना था। •

जल बचाओ जीवन बचाओ

जल संरक्षण से हमारा आशय न केवल हमारी भावी पीढ़ियों के लिए जल संसाधन स्रोतों से है बल्कि बाढ़ के जोखिम को कम करने तथा बेहतर सिचाई प्रणाली से भी है। पारंपरिक वर्षा जल संग्रहण तकनीके कई युगों से इस काम को करती आती रहीं है और उनसे सीखने के लिए काफी कुछ हमारे पास है। कुछ तकनीकें निम्नानुसार हैं :–

कुल्स् (Kuhls)–विपथन जल मार्गों जिनके द्वारा हिमाचल प्रदेश में काफी लंबे समय से स्पीति क्षेत्र में ग्लेशियरों द्वारा गांवों को पानी पहुंचाया जाता रहा है। जहां पर भूभाग कीचड़–युक्त है ये चट्टानों के साथ जुड़े रहते हैं ताकि यह भर न पाए।

कुईस (Quis)–कच्ची संरचनाएं (10–12 मीटर) जिन्हें रिसाव को इक्टठा करने के लिए टैंकों के पास खोदा गया ; आम तौर पर लकड़ी के पटरों से ढके होते हैं। गड्ढे का मुंह संकरा होता है और गहराई के साथ चौढ़ा होता चला जाता है। इनको कम बारिश वाले इलाकों में वर्षा जल संग्रहण के लिए उपयोग में भी लाया जा सकता है। यह प्रणाली राजस्थान के बीकानेर और जैसलमेर में पायी जाती है।

आहाड़पाइन्स (Aharpynes) – दक्षिणी बिहार के लिए इस देसी सिंचाई प्रणाली द्वारा भूभाग में प्राकृतिक रूप से बनी ढलान के स्तर में वृद्धि की जाती है। यह शेष तीन किनारों पर तटबंध बनाती है। पाइन्स वे विपथन जल मार्ग हैं जिन्हें खेती वाले मैदानों में नदी के जल का उपयोग करने के लिए बनाया गया है। नदी से प्रारंभ होकर ये मैदानों से होते हुए आहाड़ में जाकर मिलते हैं।

जाबो (Zabo) – शाब्दिक अर्थ अवरुद्ध जल है। इस प्रणाली का नगालैंड में प्रचलन है। इसके अंदर एक पहाड़ी की चोटी पर संरक्षित वन भूमि होती है, बीच में पानी इक्ट्ठा करने के टैंक होते हैं, और इसके निचली साइट पशुओं का बाड़ा तथा धान के खेत होते हैं। इस तरह वन, खेती तथा पशुओं की देखभाल के साथ पानी का संरक्षण किया जाता है।

पनमकेनी (Panamkeni) – केरल के वायानाड जिले में स्थित पनमकेनी खास तरीके के कुएं होते हैं। पानी में लंबे समय तक पानी के अंदर टॉडी खजूर के तनों को डुबो करके बनाया जाता है ताकि सड़ा हुआ भाग अलग हो जाए और केवल सख्त बाहरी परत बचे। इन सिलिन्डरों (तनों) को तब खेतों तथा जंगलों में भूजल–झरनों में डुबोया जाता है। इस प्रकार भयंकर गरमी के महीनों में भी यह प्रचुर जल का स्रोत है।

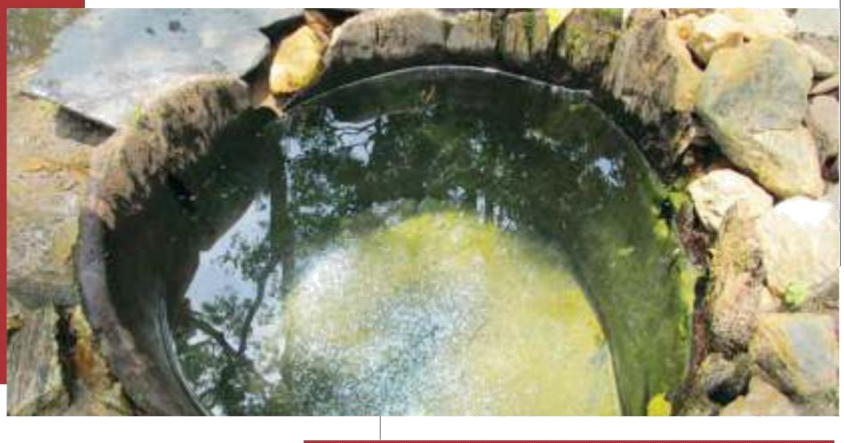

रामटेक मॉडल (Ramtek Model) – इसका नाम महाराष्ट्र के रामटेक में जल संग्रहण संरचनाओं के पाए जाने के कारण पड़ा। इस प्रणाली, जो भूजल तथा धरातलीय जल निकायों का एक जटिल नेटवर्क है, में तलहटी/तराई से मैदानी इलाकों तक तालाबों की एक श्रृंखला शामिल है। पहाड़ियों में स्थित यह तालाब एक बार पूरी तरह भर जाते हैं तो पानी नीचे की तरफ स्थित तालाबों में एक के बाद एक भरता चला जाता है, और आम तौर पर अंत में एक छोटे पानी के गड्ढे में चला जाता है जिसमें इस्तेमाल न हो पाने वाला जल भी जमा रहता है।

उत्तर प्रदेश बाढ़ से निपटने की तैयारी करता है

स्थानीय लोगों ने चिल्लाते हुए मदद के लिए आवाज लगाई–"बचाओ बचाओ" जब उन्होंने देखा कि दो नौजवान लड़के देवरिया के पास गोरा नदी में डूब रहे हैं। नदी पूरे उफान पर थी और उनको बचाना एक मुश्किल काम बनता जा रहा था। यद्यपि प्रशिक्षित एनडीआरएफ (राष्ट्रीय आपदा मोचन बल) के लिए यह मुश्किल नहीं था। वो दो मोटरबोटों में घटना स्थल पर पहुंचे और नदी में छलांग लगाकर लड़कों को बचा लिया।

उसी समय गोरखपुर में राप्ती नदी में जल का स्तर खतरे के स्तर से ऊपर चल रहा था और पड़ोस के तीन गांवों को खाली कराया गया था। इन गांवों के लोगों को राहत शिविरों में लाया गया; खाना तथा पीने का पानी तथा चिकित्सा सहायता दी गई।

इसी प्रकार के राहत कार्य 23 बाढ़–प्रभावित जिलों में विभिन्न स्थानों में किए जा रह थे। इन कार्यों को एनडीएमए के मेजर जनरल (सेवानिवृत्त) वी.के. दत्ता द्वारा बारीकी से मॉनिटर किया जा रहा था जो समन्वय में रही खामियों के लिए पूरी प्रक्रिया का बाद में विश्लेषण करेंगे तथा उन खामियों को दूर करने के लिए उपायों का प्रस्ताव करेंगे।

जहां इस कार्यक्रम पर प्रतिक्रियाएं वास्तविक थीं वहीं शुक्र है कि यह कार्यक्रम खुद वास्तविक नहीं था। बाढ़ के प्रति तैयारी पर एक कृत्रिम अभ्यास के लिए बाढ़ तथा इसके बाद के दुष्परिणामों पर नकली परिदृश्य रचे गए। उत्तर प्रदेश बाढ़ के प्रति अत्यधिक संवेदनशील राज्य है और बाढ़ राज्य के कुछ या अन्य भाग को प्रति वर्ष प्रभावित करती है। 240.9 लाख हैक्टेयर के कुल भोगोलिक क्षेत्र में से, लगभग 73,36 लाख हैक्टेयर भूमि बाढ़ प्रवण है।

यह अभ्यास भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) से बड़ी नदियों–गंगा, घाघरा, गंडक, राप्ति, रामगंगा आदि–के साथ–साथ इसकी सहायक नदियों–के जलग्रहण इलाकों में भारी बारिश की चेतावनी के साथ शुरू हुआ। जिलों को अपने संसाधन जुटाने, लोगों को चेतावनियां जारी करने तथा निचले इलाकों को खाली करने की सलाह दी गई।

बाढ़–संबंधित परिदृश्यों जैसे गांव का अलग–थलग पड़ना, डूबने की घटनाओं, दूरभाष संचार का ठप पड़ना, असहाय लोगों को ढूंढने के लिए वायु सेना के हैलीकॉप्टरों के हवाई सर्वक्षण का उपयोग किया गया। सेना के कार्मिकों को प्रेक्षक के रूप में नियुक्त किया गया। खाने के पैकेटों को गिराया गया, प्राथमिक सहायता दी गई, निकास कार्य का नकली अभ्यास किया गया। संक्षेप में, हमने वास्तविकता के निकट, यथासंभव स्थितियां सृजन करने का प्रयास किया। अब मेजर जनरल वी.के. दत्ता (सेवानिवृत्त) ने कहा, "हितधारक पूर्णतया यह जानते हैं कि उन्होंने वास्तविक बाढ़ के आने पर मोचन कार्य किस प्रकार करना है।"

सर्वाधिक बाढ़ प्रवण जिले
पीलीभीत, लखीमपुर खीरी, सीतापुर, बहराई, बाराबंकी, गोंडा, फैजाबाद

अंबेडकरनगर, बस्ती, संत कबीरनगर, जामगढ़, मऊ, बलिया, देवरिया, कुशीनगर, गोरखपुर, सिद्धार्थनगर, बदांयूँ, फर्रूखाबाद, बिजनौर, बलरामपुर, श्रावस्ति, महाराजगंज

एनडीएमए ने इस अभ्यास का संचालन राज्य प्रशासन के सहयोग से किया। लेफ्टिनेंट जनरल एन.सी. मरवाह, सदस्य, एनडीएमए ने कहा, घनी आबादी वाले राज्य में सभी एजेंसियों की तैयारी तथा मोचन प्रक्रम के आंकलन पर लक्षित, इस अभ्यास से उन समुदायों जो साल–दर–साल बाढ़ से लड़ते हैं, के बीच बाढ़ के बारे में–क्या करें

तथा क्या न करें के बारे में तथा बुनियादी तैयारी, प्रशमन तथा रोकथाम उपाय के बारे में जागरूकता फैलाने में मदद मिली।

उन्होंने यह भी कहा कि अभ्यास में भाग लेने वाले स्वयंसेवकों की संख्या उत्साहवर्धक थी। जिला कलक्टर यह देख कर आश्चर्यचकित थे कि जिला स्तर पर पांच हजार स्वयंसेवक और सबद्ध बल उपलब्ध है जिनको आपदा मोचन के लिए उपयोग में लाया जा सकता है।

वीडियो कॉनफ्रेंसिंग के द्वारा किए गए अभ्यास पश्चात विशलेषण में, सभी भागीदार जिलों में अभ्यास के दौरान सामना की गई चुनौतियों पर चर्चा की गई। भागीदारों द्वारा महसूस की गई एक प्रमुख बाधा यह थी कि उनका वास्तविक स्थिति के दौरान संचार यंत्रों जैसे सेटलाइट फोनों के इस्तेमाल में विशेषज्ञता का न होना है। मेजर जनरल दत्ता ने, बेतार संचार यंत्रों के इस्तेमाल में प्रशिक्षण तथा नियमित अभ्यास की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा "बेहतर संचार से बेहतर समन्वय पक्का होगा"।

बाढ़ की तैयारी के संबंध में बड़े पैमाने पर राज्य में किया गया यह पहला बड़ा अभ्यास था। सुश्री अदिति उमराव, परियोजना निदेशक, आपातकालीन प्रचालन, उत्तर प्रदेश, एसडीएमए ने कहा कि यह अभ्यास आपदा प्रबंधन के काम में लगे अधिकारियों तथा स्वयंसेवकों के लिए एक–समान रूप से एक रिफ्रेशर कोर्स की तरह था। इस अभ्यास ने हमारी तैयारी तथा मोचन प्रक्रमों को बेहतर बनाया, उन्होंने यह भी बताया कि 'हमने अपनी संसाधन माल–सूची को अपडेट कर दिया है और अपने सबकों से अच्छी सीख ली है। उत्तर प्रदेश इस वर्ष बाढ़ से निपटने के लिए तैयार है।'•

नागरिक सुरक्षा पर अनिल के.मलिक से बातचीत

नागरिक सुरक्षा को समुदाय स्तर पर आपदा मोचन के साथ–साथ समुदायों के क्षमता–निर्माण के लिए एक परिसंपत्ति माना जाता है। नागरिक सुरक्षा के कार्यों को और मजबूती प्रदान करने के लिए, एनडीएमए ने मई, 2018 में इस विषय पर एक एक–दिवसीय सम्मेलन आयोजित किया। भारत में नागरिक सुरक्षा की कार्यप्रणाली को समझने के लिए, आपदा संवाद ने श्री अनिल के. मलिक, अपर चीफ वार्डन, दिल्ली नागरिक सुरक्षा से बातचीत की।

प्रश्न. कृपया नागरिक सुरक्षा के संरचना तथा भूमिका को संक्षेप में स्पष्ट करें ?

उत्तर. भारत में नागरिक सुरक्षा प्राथमिक रूप से स्वयंसेवा आधार पर संगठित है सिवाय वेतन भोगी स्टॉफ तथा स्थापना प्रभाग के एक छोटे समूह के जिसमें अपातस्थितियों के दौरान वृद्धि हो जाती है। इस संगठन के अध्यक्ष महानिदेशक, अग्निशमन सेवाएं, नागरिक सुरक्षा तथा होम गार्डस् हैं। उनकी सहायता सभी तीन प्रमुखों के अंतर्गत स्टाफ के अधिकारी/कर्मचारी द्वारा की जाती है।

नागरिक सुरक्षा का अभिप्राय तात्कालिक आपातस्थितियों से निपटना, जानों को बचाना, आधारढांचे के नुकसान को न्यूनतम करना, जनता को संरक्षित करना, उन महत्वपूर्ण सेवाओं तथा सुविधाओं की पुनर्बहाली करना जो आपदा के कारण नष्ट या नुकसान में आ गई हों और इस प्रकार जनता का मनोबल ऊंचा रखने से है। पूर्व में इसका अभिप्राय किसी युद्ध के दौरान नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करना था। तथापि, पिछले कुछ वर्षों में, इसकी भूमिका परंपरागत युद्धों के दौरान क्षति प्रबंधन के साथ–साथ प्राकृतिक तथा मानवजनित, दोनों तरह की आपदाओं से होने वाले खतरों के प्रति उपाय करना भी शामिल है।

प्रश्न. भारत में आपदा प्रबंधन में नागरिक सुरक्षा क्या भूमिका निभा सकती है ?

उत्तर. वर्ष 2010 में नागरिक सुरक्षा अधिनियम में संशोधन ने देश में आपदा प्रबंधन में नागरिक सुरक्षा के उपयोग हेतु मार्ग प्रशस्त कर दिया है। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन नीति, 2009 और राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन योजना, 2016 में भी नागरिक सुरक्षा कार्मिकों के क्षमता निर्माण पर विचार किया गया है।

प्राकृतिक तथा मानवजनित आपदाओं से सदैव खतरे का अर्थ नागरिक सुरक्षा के हिस्से में और भी बड़ी जिम्मदारी को होना है। नागरिक सुरक्षा संगठन किसी आपदा के दौरान तथा बाद में प्राथमिक चिकित्सा उपलब्ध कराके, राहत सामग्री का वितरण करके, यातायात का सुचारु प्रबंधन, आधिकारिक सूचना तथा चेतावनियों का प्रसार आदि करके सुरक्षित निकास, खोज तथा बचाव अभियानों में मदद कर सकता है।

बचाव, राहत तथा पुनर्वास के अलावा, यह सामुदायिक क्षमता निर्माण तथा जन जागरुकता के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

सामान्य काल के दौरान, यह जनता के बीच स्कूली बच्चों, युवा वर्ग के साथ–साथ सामुदायिक सदस्यों के बीच शिक्षा तथा प्रशिक्षण के द्वारा जागरुकता फैलाने में एक प्रमुख भूमिका निभा सकता है। यह नागरिक सुरक्षा कार्यों तथा आपदा की स्थिति में उनकी भूमिका के बारे में सरकारी कर्मचारियों को सुग्राहीकृत करने में भी एक भूमिका निभा सकता है।

प्रश्न. हम युवाओं को नागरिक सुरक्षा के जुड़ने के लिए किस प्रकार प्रेरित कर सकते हैं ?

उत्तर. समुदाय आधारित स्वैच्छिक संगठन होने के कारण, नागरिक सुरक्षा संगठन की सफलता इस पर निर्भर करती है इसे जनता से बड़ी मात्रा में क्या फीडबैक मिलता है। इसलिए यह जरूरी है कि लोगों में पर्याप्त जन जागरुकता उपायों, पंजीकरण अभियानों के माध्यम से नागरिक सुरक्षा संगठन से लोगों में रूचि पैदा की जाए तथा उसे कायम रखा जाए।

जितना ज्यादा लोगों को नागरिक सुरक्षा तथा उसकी मान्यता तथा उसको मिलने वाली प्रतिष्ठा के बारे में पता चलेगा उतना ही वे इससे जुड़ने के लिए प्रेरित होंगे।

प्रश्न. किस प्रकार हमारे नागरिक सुरक्षा संगठन की कार्य क्षमता को और बेहतर बनाया जा सकता है ?

उत्तर. जन जागरुकता उपायों के साथ प्रशिक्षण, कृत्रिम कवायद तथा अभ्यासों के संबंध में नियमित कार्यकलाप हमारे नागरिक सुरक्षा संगठन की कार्यक्षमता को और बेहतर बनाने में दीर्घावधि तक लाभकारी सिद्ध होंगे। साथ ही, स्थानीय पुलिस थाना, अग्निशमन केंद्रों तथा अस्पतालों के साथ तालमेल जिससे आपातकालीन स्थितियों से निपटने में उन्हें प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त होने में मदद मिले, से उनकी कार्यक्षमता और बेहतर बनाने में मदद मिलेगी। इससे वे आपदा स्थितियों के दौरान बेहतर मोचन कार्य करने के लिए तैयार होंगे।

प्रश्न. किन देशों में एक सराहनीय नागरिक सुरक्षा प्रणाली मौजूद है ?

उत्तर. संसार के कई देशों में एक स्पृहणीय नागरिक सुरक्षा प्रणाली मौजूद हैं। सिंगापुर, आस्ट्रेलिया, यूनाइटेड किंगडम तथा रूस के नागरिक सुरक्षा सेटअपों से बहुत कुछ सीखा जा सकता है।

सिंगापुर नागरिक सुरक्षा बल (एससीडीएफ) में भारी संख्या में स्वयंसेवक हैं जो विभिन्न कौशलों में प्रशिक्षित हैं और किसी आपदा की स्थिति में तेजी से अपनी सेवाएं देते हैं। एससीडीएफ जन जागरुकता पैदा करने के लिए आपातकालीन तैयारी कार्यक्रम भी संचालित करता है।

आपातकालीन प्रबंधन आस्ट्रेलिया (ईएमए) एक समुदाय आधारित प्रणाली का उदाहरण है जिसकी देश में व्यापक पहुंच है। ईएमए का फोकस उन स्वयंसेवकों को भर्ती करने तथा प्रशिक्षण देने पर है जिनको आवधिक तौर पर सरकार द्वारा भी मान्यता दी जाती है।

इसी तरह यूनाइटेड किंगडम तथा रूस में भी नागरिक सुरक्षा सेटअप आपदा स्थितियों में सरकारी प्रयासों में मदद करने में अनुकरणीय कार्य करते हैं।

प्रश्न. एनडीएमए द्वारा संचालित कार्यशाला के क्या निष्कर्ष रहे ?

उत्तर. इस कार्यशाला ने एक दूसरे से बेहतरीन प्रथाओं तथा सीखे गए सबकों का विनिमय करने के लिए एक मंच के रूप में काम किया। उदाहरण के लिए, मध्य प्रदेश से प्रतिनिधि ने सूचित किया कि राज्य ने नागरिक सुरक्षा स्वयंसेवकों की पहचान को प्रमाणित करने के लिए एक डिजिटल मान्यता प्रणाली तैयार की है। आपातस्थिति के मामले में, उस क्षेत्र के स्वयंसेवकों को एक स्वचालित एसएमएस अलर्ट भेजा जाता है।

ऐसी कार्यशालाओं से हमें प्रेरणा भी मिलती है और नागरिक सुरक्षा के कार्य भी सुचारू रूप से जारी रहते हैं। •

बाढ़

बाढ़ आने से पहले

- अफवाहों से बचें, शांत रहें, घबराएं नहीं
- आपातकालीन संचार के लिए अपना मोबाइल फोन चार्ज करके रखें, एसएमएस का उपयोग करें
- मौसम की अपडेटों के लिए रेडियो सुनें, टीवी देखें, अखबार पढ़ें
- पालतू मवेशी/पशुओं को उनकी सुरक्षा के लिए बांध कर न रखें
- सुरक्षा तथा उत्तरजीविता हेतु अनिवार्य चीजों के साथ एक आपातकालीन थैला तैयार करें
- अपने दस्तावेजों तथा कीमती सामानो को वाटरप्रूफ थैले में रखें

बाढ़ के दौरान

- बाढ़ के पानी में न घुसें। यदि ऐसा करना जरूरी हो तो उपयुक्त जूते/चप्पल आदि पहनें
- सीवर लाइनों, गटर, नालों, पुलिया आदि से दूर रहें
- बिजली के खंभों तथा टूटी हुई/गिरी पड़ी बिजली की तारों से दूर रहें ताकि बिजली का करंट न लगे
- ताजा पकाया हुआ भोजन या शुष्क खाद्य पदार्थ खाएं, अपने खाने को ढक कर रखें
- उबला हुआ/क्लोरीन युक्त पानी पिएं
- अपने आस पास के वातावरण को साफ रखने के लिए कीटाणुनाशकों का इस्तेमाल करें

बाद में

- बच्चों को बाढ़ के पानी में या उसके आस पास खेलने के लिए न जाने दें
- कोई भी क्षतिग्रस्त बिजली का सामान इस्तेमाल न करें, उसकी मकैनिक द्वारा जांच कराएं
- टूटे हुए बिजली के खंभों तथा तारों, नुकीली वस्तुओं तथा मलबे का ध्यान रखें
- बाढ़ में पड़ी खाद्य सामग्री का न खाएं
- मलेरिया रोकने के लिए मच्छरदानी का उपयोग करें
- यदि पानी की पाइप लाइनें/सीवर पाइप टूटे हुए हो तो शौचाल्य या नल के पानी का उपयोग न करें

पता:
एनडीएमए भवन
ए–1, सफदरजंग एनक्लेव, नई दिल्ली–110029.

दूरभाष सं० : +91–11–26701700
नियंत्रण कक्ष : +91–11–26701728
सहायता सं० : 011–1078
फैक्स : +91–11–26701729

controlroom@ndma.gov.i apdasamvaad@gmail.com /NDMA.in @ndmaindia